शहादतैन का अर्थ और उनकी शर्तें

[*हिन्दी*]

معنى الشهادتين وشروطهما

[اللغة الهندية]

संकलन

अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह

عطاء الرحمن ضياء الله

المكتب التعاوني للدعوة وتوعية الجاليات بالربوة بمدينة الرياض

इस्लामी आमन्त्रण एंव निर्देश कार्यालय रब्वा, रियाज़, सऊदी अरब

1430 - 2009

islamhouse.com

بسم الله الرحمن الرحيم

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मैं अति मेहरबान और दयालु अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ।

الحمد لله رب العالمين، والعاقبة للمتقين، والصلاة والسلام على المبعوث رحمة للعالمين، نبينا محمد وعلى آله وصحبه أجمعين، ومن تبعهم بإحسان إلى يوم الدين، أما بعد:

इस्लाम धर्म की आधारशिला पाँच स्तम्भों पर स्थापित है, उनमें सर्व प्रथम स्तंभ **'ला-इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह'** की शहादत (गवाही) देना है। यही कल्मा इस्लाम और कुफ्र के बीच अन्तर करने वाला है, जिसके पढ. लेने से एक मनुष्य इस्लाम के धर्म में प्रवेश कर जाता है और उसका जान व माल सुरक्षित हो जाता है। हर मुसलमान अपनी जुबान से इस कल्मे को पढता है, किन्तु इस का वास्तविक अर्थ क्या है? इसके पढ. लेने से एक मुसलमान की क्या जिम्मेदारी (दायित्त्व) बन जाती है, और इस कल्मे का इक़रार एक मुसलमान के लिए आख़िरत में कब लाभप्रद होगा? इन से अधिकतर मुसलमान अनावगत और अनभिज्ञ हैं, इसी कारण वे इस कल्मे का इक़रार करने के बावजूद ऐसे कार्य करते हैं जो इस कल्मे के विपरीत हैं और जिनके साथ इस कल्मे का इक़रार अर्थहीन और अप्रभावी होकर रह जाता है। अतः निम्नलिखित पंक्तियों में इस कल्मे का वास्तविक अर्थ और उन शर्तों का संछिप्त उल्लेख किया जा रहा है जिनका इस कल्मे का इक़रार करने वाले के अन्दर पाया जाना अनिवार्य और जरूरी है।

ला-इलाहा इल्लल्लाह की गवाही का अर्थ एंव शर्तें

असर में आता है कि **ला-इलाहा इल्लल्लाह्** जन्नत की कुंजी है, लेकिन क्या हर **ला-इलाहा इल्लल्लाह्** कहने वाला व्यक्ति इस बात का हक़्दार हो गया कि उस के लिए जन्नत का द्वार खोल दिया जाए गा? वह्ब बिन मुनब्बिह रहिमहुल्लाह से पूछा गया : क्या **ला-इलाहा इल्लल्लाह्** जन्नत की कुंजी नहीं है? तो उन्होंने जवाब दिया क्यों नहीं, लेकिन हर कुंजी के दांत होते हैं, यदि तुम दांत वाली कुंजी लेकर आओगे तो तुम्हारे लिए द्वार खोल दिया जाए गा, नहीं तो नहीं खोला जाए गा।

हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बहुत सारी हदीसें आई हैं जो सब मिलकर (जिनका समूह) इस कुंजी के दांतों को स्पष्ट करती हैं, जैसे कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह फ़रमानः

« مَنْ قَالَ : لاَ إِلَهَ إِلا اللَّهُ مُخْلِصًا دَخَلَ الْجَنَّةَ...»

"जिस आदमी ने इख़्लास के साथ ला-इलाहा इल्लल्लाह् कहा, वह जन्नत में दाखिल होगा।" (मो'जमुल कबीर लित्तबरानी)

और यह फरमान :

« اذهب بنعلي هاتين فمن لقيت من وراء هذا الحائط يشهد أن لا إله إلا الله مستيقناً بها قلبه فبشره بالجنة...»

"मेरी ये दोनों जूतियाँ लेकर जाओ और इस बगीचे के पीछे जिस आदमी से भी मुलाक़ात हो जो दिल में विश्वास रखते हुए ला-इलाहा इल्लल्लाह की गवाही देता हो उसे जन्नत की बशारत दे दो।" (मुस्लिम)

और यह फरमान :

((إني لأعلم كلمة لا يقولها عبد حقا من قلبه فيموت على ذلك إلا حرمه الله على النار : لا إله إلا الله))

"मैं एक कल्मा जानता हूँ जिसे कोई भी बन्दा अपने दिल से ह़क़ (सत्य) जानते हुए कहता है और उसी पर उसकी मृत्यु होती है, तो अल्लाह तआला उस पर जहन्नम को हराम कर दे गा, वह कल्मा : ला-इलाहा इल्लल्लाह है।" (मुस्तदरक हाकिम)

चुनांचे इन ह़दीसों में और इसी तरह की अन्य ह़दीसों में जन्नत में जाने के लिए यह शर्त लगाई गई कि **ला-इलाहा इल्लल्लाह्** कहने वाला व्यक्ति उसका अर्थ जानता हो, मरने तक उस पर साबित रहा हो, और उसका जो अभिप्राय है उसकी पाबन्दी करना इत्यादि।

इस बारे में वारिद दलीलों के समूह से उलमा ने कल्मए **ला-इलाहा इल्लल्लाह्** की कुछ शर्तें निर्धारित की हैं जिनका पाया जाना और उनके विपरीत चीज़ों (रूकावटों) का समाप्त होना ज़रूरी है, ताकि यह कल्मा जन्नत की कुंजी बने और अपने कहने वाले को लाभ पहुँचाए, और यही शर्तें ही इसके दांत हैं, जो निम्नलिखित हैं:

❶ **इल्म (ज्ञान) :** प्रत्येक शब्द का एक अलग अर्थ होता है, इस लिए **ला-इलाहा इल्लल्लाह्** का अर्थ इस तौर पर जानना ज़रूरी है जो जहालत (अज्ञानता) को समाप्त कर देने वाला हो, यह कल्मा ग़ैरुल्लाह की इबादत को नकारता है, और इबादत को मात्र अल्लाह तआला के लिए साबित करता है, अर्थात् : अल्लाह के सिवाय कोई सत्य मा'बूद (उपास्य) नहीं। अल्लाह तआला का फ़रमान है:

﴿ إِلَّا مَن شَهِدَ بِالْحَقِّ وَهُمْ يَعْلَمُونَ﴾ (سورة الزخرف: ٨٦)

"हां, जो सच बात (कल्मए ला-इलाहा इल्लल्लाह) को स्वीकार करें और उन्हें इसकी जानकारी भी हो"। (सूरतुज़्ज़ुख़रुफ : ८६)

और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

"जिस की मौत इस ह़ालत में हुई कि वह जानता हो कि अल्लाह के सिवाय कोई इबादत के लायक़ नहीं तो वह जन्नत में दाख़िल होगया।" (मुस्लिम)

❷ **यक़ीन (विश्वास) :** आप को इसके अर्थ पर दृढ़ विश्वास हो; क्योंकि इस में शक, गुमान, संकोच और सन्देह की कोई गुन्जाइश नहीं है, बल्कि ज़रूरी है कि

यह दृढ़ और पक्का यक़ीन पर आधारित हो। अल्लाह तआला ने मोमिनों का वस्फ बयान करते हुए फ़रमाया:

﴿إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ثُمَّ لَمْ يَرْتَابُوا وَجَاهَدُوا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ أُوْلَئِكَ هُمُ الصَّادِقُونَ﴾ (سورة الحجرات: ١٥)

"ईमान वाले तो वे हैं जो अल्लाह पर और उसके रसूल पर ईमान लायें, फिर शक न करें, और अपने माल से और अपनी जान से अल्लाह के रास्ते में जिहाद करते रहें, (अपने ईमान के दावे में) यही लोग सच्चे हैं।" (सूरतुल हुजरात :१५)

चुनांचि केवल ज़ुबान से इक़्रार करना काफी नहीं है, बल्कि दिल से विश्वास करना ज़रूरी है, यदि दिल में यक़ीन न हो तो यही निफ़ाक़ है, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

"मैं शहादत देता हूँ कि अल्लाह के सिवाय कोई सच्चा पूज्य नहीं और मैं अल्लाह का रसूल हूँ, जो व्यक्ति भी इन दोनों बातों के साथ इन में शक व सन्देह नकरत हुए अल्लाह से मुलाक़ात करेगा, वह जन्नत में दाख़िल होगा।" (मुस्लिम)

❸ **क़बूल :** जब आप को इसके अर्थ की जानकारी हो गई और उस पर यक़ीन भी हो गया, तो ज़रूरी है कि आप पर इस यक़ीनी जानकारी का प्रभाव भी दिखाई दे, और वह इस तरह से कि इस कल्मा के तक़ाज़ों को दिल और ज़ुबान से क़बूल कर लिया जाए, अतः जिस ने तौहीद की दावत को ठुकरा दिया और उसे क़बूल नहीं किया तो वह काफ़िर है, चाहे यह ठुकराना घमण्ड के कारण हो या हठ या हसद के कारण हो, अल्लाह तआला ने उन काफ़िरों के बारे में जिन्होंने घमण्ड करते हुए इसका इन्कार कर दिया, फ़रमाया:

﴿إِنَّهُمْ كَانُوا إِذَا قِيلَ لَهُمْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ يَسْتَكْبِرُونَ﴾ (الصافات: ٣٥)

"ये वे लोग हैं कि जब उन से कहा जाता है कि अल्लाह के सिवाय कोई सच्चा मा'बूद नहीं, तो यह घमण्ड करते थे।" (सूरतुस्साफ्फात :३५)

❹ **इन्क़ियाद :** तौहीद के लिए पूरी ता'बेदारी हो, और यही दरअसल ईमान की वास्तविक कसौटी और अमली मज़हर (दृश्य) है, जो कि अल्लाह तआला की शरीअत के अनुसार अमल करने और उसकी मनाही की हुई चीज़ों से दूर रहने से पूरी होती है, जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

﴿وَمَن يُسْلِمْ وَجْهَهُ إِلَى اللَّهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقَى وَإِلَى اللَّهِ عَاقِبَةُ الْأُمُورِ﴾ (سورة لقمان: ٢٢)

"और जो व्यक्ति अपने आप को अल्लाह के ताबे (अधीन) करदे और वह हो भी नेकी करने वाला , तो यक़ीनन उसने मज़बूत कड़ा थाम लिया, और सभी कामों का अन्जाम अल्लाह की ओर है।" (सूरत लुक़्मान :२२) और यही कामिल ता'बेदारी है।

❺ **सच्चाई : ला-इलाहा इल्लल्लाह्** कहने वाला व्यक्ति अपनी बात में सच्चा हो, यदि किसी ने मात्र ज़ुबान से कहा हो और उसका दिल उसे झुठलाने वाला हो तो वह मुनाफ़िक़ है, और इसकी दलील मुनाफ़िक़ीन की मज़म्मत में अल्लाह तआला का यह फ़रमान है :

﴿يَقُولُونَ بِأَلْسِنَتِهِم مَّا لَيْسَ فِي قُلُوبِهِمْ﴾ (سورة الفتح: ١١)

"यह लोग अपनी ज़ुबानों से वह बाते कहते हैं जो उनके दिलों में नहीं है।" (सूरतुल-फत्ह :११)

❻ **महब्बत :** मोमिन व्यक्ति इस कलमा से महब्बत करे, इसके तक़ाज़े के अनुसार अमल करना पसंद करे, और जो लोग इसके अनुसार अमल करने वाले हैं उनसे महब्बत करे। बन्दे के अपने रब से महब्बत करने की निशानी यह है कि जो चीज़ें अल्लाह तआला को पसन्द हैं उन्हें वह प्राथमिकता दे चाहे वे उसकी चाहत के ख़िलाफ़ ही हों, और जो अल्लाह और उसके रसूल से दोस्ती रखते हैं उन से दोस्ती करे, और जो अल्लाह और उसके रसूल से दुश्मनी करते हैं उन से दुश्मनी करे, और अल्लाह के रसूल की पैरवी करे, उनके नक्शे क़दम पर चले, और उनका मार्ग-दर्शन स्वीकार करे।

❼ **इख़्लास :** इस कल्मा के इक़्रार द्वारा उसकी चाहत मात्र अल्लाह तआला की खूश्नूदी हो, अल्लाह तआला का फ़रमान है :

﴿وَمَا أُمِرُوا إِلَّا لِيَعْبُدُوا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ حُنَفَاءَ﴾ (البينة: ٥)

"उन्हें इसके सिवाय कोई हुक्म नहीं दिया गया कि केवल अल्लाह की इबादत करें, उसी के लिए धर्म को शुद्ध (खालिस) कर करके, यकसू हो कर।" (सूरतुल बय्यिना :५)

और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

"अल्लाह तआला ने उस व्यक्ति को जहन्नम पर हराम कर दिया है जिसने अल्लाह की खुश्नूदी चाहते हुए ला-इलाहा इल्लल्लाह् कहा हो।" (बुखारी)

इन सभी शर्तों के एक साथ पाए जाने के साथ-साथ यह भी जरूरी है कि आदमी मरने तक इस कल्मा पर साबित और कायम रहे।

मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह की गवाही का अर्थ एंव शर्तें

क़ब्र में मैयित की परीक्षा होती है और उससे तीन प्रश्न किए जाते हैं, यदि उसने उनका उत्तर दे दिया तो सफल होगया और अगर उनका जवाब न दे सका तो तबाह व बर्बाद हुआ। उनमें से एक प्रश्न यह होगा कि **तेरा नबी कौन है?** इस प्रश्न का उत्तर वही व्यक्ति दे सकेगा जिसे अल्लाह ने संसार में इसके शराएत पूरी करने की तौफ़ीक़ दी होगी, और क़ब्र में उसे साबित क़दम रखा होगा और इसका इल्हाम किया होगा। फिर आख़िरत में जिस दिन माल और संतान किसी को लाभ न दें गे यह उसके लिए लाभदायक सिद्ध होगा। यह शर्तें निम्नलिखित हैं :

❶ **नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जिन चीज़ों का आदेश दिया है, उनमें आपकी फरमांबरदारी करना :** क्योंकि अल्लाह तआला ने हमें आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की फरमांबरदारी का हुक्म दिया है, चुनांचे फ़रमाया:

﴿مَّنْ يُطِعِ الرَّسُولَ فَقَدْ أَطَاعَ اللَّهَ﴾ (سورة النساء: ٨٠)

"जिस ने रसूल की फ़रमांबरदारी करे उसी ने अल्लाह की फरमांबरदारी की।" (सूरतुन्निसा :८०)

तथा फरमाया :

﴿قُلْ إِن كُنتُمْ تُحِبُّونَ اللَّهَ فَاتَّبِعُونِي يُحْبِبْكُمُ اللَّهُ﴾ (سورة آل عمران: ٣١)

"कह दीजिए यदि तुम अल्लाह से महब्बत रखते हो तो मेरी ताबेदारी करो स्वयं अल्लाह तुम से महब्बत करेगा।" (सूरत आल-इम्रान :३१)

जन्नत में दाखिला आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इताअत पर निर्भर है, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

"मेरी उम्मत का हर व्यक्ति जन्नत में जाएगा सिवाय उसके जिसने इन्कार कर दिया, लोगों ने कहा : ऐ अल्लाह के रसूल! (जन्नत में जाने से) कौन इन्कार करेगा? तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: जिसने मेरी फरमांबरदारी की वह जन्नत में जाएगा, और जिसने मेरी नाफ़रमानी की उसने (जन्नत में जाने से) इन्कार किया।" (बुख़ारी)

और जिसे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से महब्बत है, वह ज़रूर आप की फरमांबरदारी करेगा, इसलिए कि फरमांबरदारी महब्बत का फल और परिणाम है, और जो आदमी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की फरमांबरदारी के बिना आप से महब्बत का दावा करता है तो वह अपने दावे में झूठा है।

❷ **जिन चीज़ों की आप ने सूचना दी है उनमें आप को सच्चा मानना :** अत: जिस व्यक्ति ने अपनी ख़ाहिश या हवस के कारण आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से साबित (प्रमाणित) चीज़ों में से किसी चीज़ को झुठलाया तो उसने अल्लाह और उसके रसूल को झुठलाया, क्योंकि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ग़लती और झूठ से पाक और पवित्र हैं, अल्लाह तआला का फ़रमान है :

﴿وَمَا يَنطِقُ عَنِ الْهَوَى﴾ (سورة النجم: ٣)

"और वह अपनी खाहिश से कोई बात नहीं कहते हैं।" (सूरतुन्नज्म :३)

❸ **जिन चिज़ों से आप ने रोका है उन से बचना :** सब से बड़े गुनाह (महा पाप) शिर्क से लेकर अन्य बड़े-बड़े और हलाक करने वाले गुनाहों से बचते हुए छोटे-छोटे गुनाहों और मकरूह चीज़ों से बचना। और जिस मात्रा में एक मुसलमान के दिल में अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की महब्बत होगी उसी मात्रा में उसके ईमान में बढ़ोतरी होगी, और जब उसका ईमान बढ़ जाएगा, तो अल्लाह तआला उसके दिल में नेकियों को महबूब बना देगा, और कुफ्र, फ़िस्क़ और गुनाह के कामों को उसके निकट घृणित कर देगा।

❹ **अल्लाह की इबादत उसी तरीक़े पर करना जो अल्लाह तआला ने अपने नबी की जुबानी मश्रू'अ् (वैध घोषित) किया है :** इबादत में असल निषेध है (अर्थात् कोई इबादत उस वक़्त तक मना और निषिध है जब तक कि उसके वैध होने का कोई कुर्आन या सहीह हदीस से प्रमाण न मिल जाए), इसलिए अल्लाह के रसूल के लाए हुए तरीक़े के अलावा किसी और तरीक़े अनुसार अल्लाह की इबादत करना जायज़ नहीं है, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

"जिस ने कोई ऐसा काम किया जिसका हमने आदेश नहीं दिया है तो वह मर्दूद (अस्वीकृत) है।" (मुस्लिम)

✷ *ज्ञात होना चाहिए कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की महब्बत वाजिब (अनिवार्य) है, और मात्र महब्बत ही काफी नहीं है, बल्कि जरूरी है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तुम्हें हर चीज. यहाँ तक कि तुम्हारी जान से भी अधिक महबूब हों, क्योंकि जो व्यक्ति किसी चीज. से महब्बत करता है तो वह उसे और उसकी मुवाफक़त को हर चीज. पर प्राथमिकता देता है, और आप की महब्बत में सच्चा वह व्यक्ति है जिस से महब्बत की निशानी जाहिर हो, इस प्रकार कि वह आपका अनुसरण करे, कर्म और कथन में आपकी सुन्नत की पैरवी कर, आपके आदेशों का*

पालन करे और आप की मना की हुई चीजों से बचाव करे, अपनी आसानी और तंगी, चुस्ती व सुस्ती तथा पसन्दीदगी और नापसन्दीदगी में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के व्यवहार और आचरण से सुसज्जित हो, इसलिए कि फरमांबरदरी और अमझा पालन ही महब्बत का फल और परिणाम है, और इनके बिना महब्बत सच्ची नहीं हो सकती।

اللهم صل على محمد وعلى آله وصحبه وأتباعه بإحسان إلى يوم الدين، وسلم تسليماً كثيراً.

(अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह)*
atazia75@gmail.com